चार दिवसीय सम्मेलन 26 से, वैश्वीकरण पर होगी चर्चा

जासं, रांची : आइआइएम रांची ने 16वें आइएसडीएसआइ वैश्विक सम्मेलन 2023 की मेजबानी की घोषणा की है। संस्थान के विशाल नए परिसर में 26 से 29 दिसंबर तक यह आयोजन होगा। सम्मेलन का विषय वैश्वीकरण की पुनर्कल्पना, एक वैश्वीकरण वाली दुनिया में डिजिटल इंटरकनेक्शन की शक्ति...है। जहां वैश्विक संवाद को बढ़ावा दिया जाएगा। यह आयोजन शोधकर्ताओं, चिकित्सकों और नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बनाने के लिए होगा, जो अंतर्दृष्टि और विचारों को साझा करने का माध्यम बनेगा। सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो. राजेश जैन ने कहा हमें शिक्षाविदों, उद्योग जगत के नेताओं, नीति निर्माताओं सहित दुनिया भर के 1000 से अधिक लेखकों से लगभग 580 प्रस्तुतियां प्राप्त हुईं हैं। आयोजन में आइआइएम, आइआइटी, केंद्रीय विश्वविद्यालयों, अग्रणी निजी बी-स्कूलों और अन्य वैश्विक शैक्षणिक संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे। वहीं आइआइएम रांची के निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा डीग्लोबलाइजिंग पर्यावरण की जटिलताओं को प्रभावी तरीके से सामने लाने के लिए

आइआइएम रांची में हाइब्रिड मोड में 16वें इंटरनेशनल सोसाइटी फार डेटा साइंसेज एंड इनोवेशन ग्लोबल कांफ्रेंस का होगा आयोजन

बहस करना महत्वपूर्ण है। कहा कि आइआइएम रांची एक ऐसा वातावरण विकसित करने के लिए समर्पित है जो जिज्ञासा, नवीनता और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। उन्होंने कहा कि विचारों के वास्तविक वैश्विक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हुए प्रतिभागी व्यक्तिगत और आभासी दोनों तरह से जुड़ सकते हैं।

चार दिनों तक चलेगा सम्मेलन : चार दिनों तक चलने वाले इस कार्यक्रम के पहले दिन यानी 26 दिसंबर को व्यापक चर्चा के लिए माहौल तैयार करते हुए सम्मेलन की शुरुआत के लिए पांच डाक्टरेट कार्यशालाएं निर्धारित की गई हैं। 27 दिसंबर को उद्घाटन सत्र के साथ एक निदेशक पैनल भी होगा जो दो-तरफा अंतर्राष्ट्रीयकरण, भारत को उच्च शिक्षा के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाना...विषय पर केंद्रित होगा। साथ ही सतत विकास के लिए डिजिटल इनोवेशन स्ट्रैटेजीज... विषय पर चर्चा होगी।

28 दिसंबर को पत्रिकाओं में प्रकाशन पर कार्यशालाएं और विकास पर चर्चा शामिल है। केस स्टडी कार्यशाला और जनजातीय क्षेत्रों में महिला उद्यमिता पर एक सत्र का आयोजन होगा। सम्मेलन का समापन स्टार्टअप और उद्यमिता पर चर्चा के साथ होगी।

दो दिवसीय संस्कृत संभाषण वर्ग का समापन, 65 प्रशिक्षणार्थियों ने लिया हिस्सा

जासं, रांची : स्वर्णरेखा कालेज आफ फार्मेसी में संस्कृत भारती रांची द्वारा आयोजित दो दिवसीय संस्कृत संभाषण वर्ग का समापन कार्यक्रम हुआ। इसमें लगभग 65 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्कृत भारती के महानगर अध्यक्ष डा. प्रकाश सिंह ने कहा कि ज्ञान की सारी विधाओं में हमारा देश अग्रणी है और यह ज्ञान संस्कृत में ही निहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा प्राप्त ज्ञान के द्वारा ही हमारा देश चांद पर सफल आरोहण कर सका है। मुख्य वक्ता जगदम्बा प्रसाद ने कहा कि संस्कृत के उत्थान से ही राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। सरल संस्कृत संभाषण के द्वारा ही जन सामान्य में संस्कृत का विस्तार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बाल-केंद्र, संभाषण वर्ग, शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग तथा प्रगत प्रशिक्षण वर्ग के माध्यम से संस्कृत भारती के द्वारा संस्कृत का विस्तार किया जा रहा है। संचालन प्रवीण कुमार, अतिथि परिचय राहुल कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन पृथ्वीराज सिंह ने किया। डा. चंद्र माधव सिंह, रमेश कुमार, अमिताभ कुमार, आशीष कुमार, ज्योत्सना कुमारी, तनु सिंह, अंजली कुमारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran, 26.12.2023, Page4